प्राक्कथन

आधुनिक काल में हिंदी साहित्य में उपन्यास विधा का स्तर व्यापक हो चुका है। गांवों, कस्बों, गलियों, गंदी बस्तियों का जीवन साहित्य का विषय बना है। वर्तमान साहित्य में उपन्यास विधा महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय हो रही है। उपन्यास मानवीय जीवन की परतों को खोलकर हमारे सामने रखता है। सामाजिक जीवन, सामाजिक परिवेश, सामाजिक मान्यता का चित्र अंकित करने वाला हिंदी उपन्यास 'मानव जीवन का महाकाव्य' है। आज यह विधा विवेचन, विश्लेषण, संशोधन का विषय रही है। आज विश्व साहित्य के उपन्यास जगत में वृद्धि हो रही है। भाव शिल्प की दृष्टि से यह विधा संपन्न है। स्वतंत्रता के बाद के उपन्यासों में मानव जीवन की व्यथा, कथा, व्यवस्था, शोषण, नारी जीवन, सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों में होने वाला परिवर्तन आदि सभी बातों का यथार्थ रूप में चित्रण होने लगा है। सजग उपन्यासकार समकालीन मानवीय परिस्थितियों, मानव जीवन की स्थितियों का चित्रण करता है। जिससे उपन्यास मानव जीवन का इतिहास बन जाता है। इसी कारण उपन्यास समाजिक जीवन का दर्पण बन गया है। हिंदी उपन्यास विधा इसी कारण सशक्त और समृद्ध बनी है। उपन्यास विचारधारा भावभावना एवं संवेदना की वाहक ही नहीं बल्कि चरित्र का आख्यान भी है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है, इसे किसी भी हालत में नकारा नहीं जा सकता। मनुष्य को प्राणी मात्र में श्रेष्ठ साबित करने वाले जितने मानक हैं, उनमें जीवन मूल्यों का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। मूल्यों को अपनाकर व्यक्ति का चारित्रिक और सामाजिक मूल्य बढ़ता है। मूल्यों का संबंध चरित्र और नैतिकता से है। यह मानव आचरण के हितकारी आदर्श पैमाने हैं। सच्चाई, ईमानदारी, स्वाभिमान, वफ़ादारी स्वतंत्रता, देशभक्ति, सर्वहित, कर्मठता आदि शाश्वत जीवन मूल्य हैं अर्थात सभी समाज और युग में स्वीकृत हैं परंतु शिक्षा धर्म-संस्कृति संबंधी मान्यताएं, दांपत्यगत संबंधों का स्वरूप राजनीतिक, आर्थिक व्यवहार से संबंधित मानदंडों में देशकालानुसार परिवर्तन होता रहा है। साहित्य मनुष्य की श्रेष्ठतम और अक्षय कलाकृति है। अतः साहित्य में जीवन मूल्यों का अपना स्थान है। साहित्यकार का काम मातृ समाज का दशा दर्शन कराना नहीं बल्कि दिशा निर्देशन करना भी होता है। यह मूल्यों के चित्रण द्वारा ही संभव है। प्रस्तुत शोध

प्रबंध मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य पर लिखा गया है। मैत्रेयी पुष्पा बहुमुखी प्रतिभा की धनी, महिला रचनाकारों में से एक मानी जाती हैं। शोध प्रबंध में मूल्य बोध का अध्ययन किया गया है। मूल्य बोध के अंतर्गत मूल्य विकास और विघटन दोनों पक्षों पर विचार किया गया है। जीवन की व्यथा-कथा और विविधता का अंकन करने वाली यह साहित्य रचना युग परिवर्तन के साथ-साथ परिवर्तित हो रही है। समाज में मूल्य परिवर्तन हो रहा है। विचारों में बदलाव आ रहा है। मानसिक प्रवृत्तियों में टूटनशीलता आ रही है। लेखिका ने अपने उपन्यासों में जीवन की वास्तविकता को इतनी कुशलता से प्रस्तुत किया है कि उनकी रचनाओं के पात्रों और घटनाओं को दिमाग से निकाल पाना कठिन हो जाता है। उनके उपन्यास के पात्र तथा घटनाएं मूल्य बोध करवाती हैं। उन्होंने नारी की स्थिति को अपने उपन्यासों के माध्यम से दिखाया है। इनके उपन्यासों के सभी नारी पात्र अपने व्यक्तित्व को बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील दिखाई देती हैं। उनके उपन्यास परिवारिक परिस्थितियों को ही नहीं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक विषयों से भी साक्षात्कार कराते हैं। प्रत्येक युग का साहित्यकार अपने युग की मान्यताओं, रूढ़ियों और समाज में घटित समस्याओं को अपनी लेखनी में उतारता है। पिछले कुछ दशकों में जिन महिला उपन्यासकारों ने ध्यान आकर्षित किया है, उनमें उषा प्रियवंदा, कृष्णा सोबती, मन्नु भंडारी, मैत्रेयी पुष्पा आदि के नाम सुनने को मिलते हैं। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इन्हीं उपन्यासों ने मुझे अपनी ओर आकर्षित किया। मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में रोचकता दिखाई दी। इन्होंने मर्यादा में रहकर अपना साहित्य लेखन किया है। उनके उपन्यासों में जैसे-जैसे उनकी लेखनी यात्रा बढ़ती गई, उनकी मान्यताएं स्थिर होकर मूल्य बनती गई हैं। उनके पात्र जीवंत एवं सहज हैं। सन् साठ के बाद उभर कर आने वाली नई पीढ़ी की प्रतिनिधि लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा मूल्य से प्रभावित हुई तथा इसी लेखन परंपरा की अन्यतम साहित्यकार हुई हैं। इनके उपन्यास साहित्य में मूल्यों का यथेष्ट चिंतन हुआ है।

शोध विषय की प्रेरक भावभूमि:- मेरा हिंदी भाषा के प्रति लगाव आरंभ से ही था। आगे की पढ़ाई में मैंने हिंदी भाषा का चयन किया। विद्यार्थी जीवन से ही कथा

साहित्य पर मुख्यत: उपन्यास विधा के प्रति विशेष अभिरुचि होने के कारण मेरे शोध कार्य का आरंभ अर्थात प्रथम प्रयास भी यहीं से शुरू हुआ। जीवन में किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किसी प्रेरणा का होना आवश्यक है। आरंभ प्रेमचंद के उपन्यासों से किया। प्रसाद जी के उपन्यासों ने भी प्रभावित किया। तत्पश्चात मेरा ध्यान महिला लेखिकाओं की तरफ गया। जिनमें मैंने कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा, मन्नू भंडारी के उपन्यासों का अध्ययन किया। मुझे मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास रुचिकर लगे। अध्ययन के उपरांत नारी समस्या, नारी के विविध रूप, मूल्य बोध जैसी दृष्टियों के ऊपर मेरा ध्यान गया। उनके समस्त उपन्यासों का अध्ययन करने के बाद मुझे आभास हुआ कि उनकी कृतियां अन्ततः मूल्य मार्ग की ओर संकेत करती हैं। इसी कारण उनके उपन्यासों का अध्ययन करने के लिए मूल्य बोध को आधार बनाया।

शोध विषय का उद्देश्य:- मेरे शोध विषय का उद्देश्य मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य के माध्यम से समाज में मूल्यों के प्रचार-प्रसार के साथ विघटित हो रहे मूल्यों के पीछे छिपे कारणों का अध्ययन करना है। मानव समाज में एकता स्थापित करने के लिए मूल्य आवश्यक हैं लेकिन आधुनिक समाज में त्याग के स्थान पर स्वार्थ बढ़ता जा रहा है। मानव संबंध अर्थाश्रित होते जा रहे है। लोगों में एक-दूसरे के प्रति प्रेम, समर्पण, विश्वास की कमी होती जा रही है। सभी अपने-अपने स्वार्थों को पूरा करने में लगे हैं। उपन्यास साहित्य में भाई-बहन, पति-पत्नी तथा अन्य रिश्तो में मूल्य गिरते देखे गए हैं। भाई अपने फर्जों को न निभाकर धन कमाने के माध्यम से रिश्तों को नज़रांदाज करता देखा जा सकता है। इसी तरह उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध के अंतर्गत मूल्य प्रचार तथा मूल्य विघटन को वर्णित किया है। लोगों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक पक्षों को उपन्यास के माध्यम से दिखाया है।

शोध विषय का महत्व:- समाज में मानवीय मूल्यों का वर्णन हो या नारी से संबंधित स्थिति की चर्चा हो इन सब पर पुष्पा जी ने कलम की तूलिका से ऐसे शब्द चित्र खींचे हैं जो हमारे सामने एक दृश्य खड़ा कर जाते हैं। इनकी कथा में कहीं अनपढ़ समाज की पृष्ठभूमि है तो कहीं शिक्षक समाज की। दोनों समाजों

में कहीं पर मूल्यों का वहन हुआ है तो कहीं पर मूल्यों का विघटन। इनके उपन्यासों में किसी एक मूल्य की चर्चा नहीं हुई है बल्कि विभिन्न मूल्यों की चर्चा मिलती है। मूल्यों के चित्रण के साथ-साथ विभिन्न पात्रों के विभिन्न मूल्यों में परिवर्तन भी दर्शाया गया है। यह मूल्य परिवर्तन एक आदर्श स्थिति का चित्रण है। जीवन के लिए कौन से मूल्य अधिक उपयोगी हैं? फिर समाज में संतुलन की स्थिति बनाए रखने के लिए किन मूल्यों को पहल देनी चाहिए? इसका आभास मूल्य परिवर्तन की स्थिति से हो जाता है। ऐसे में मेरा प्रस्तावित शोध कार्य इस दिशा में पहल है। मूल्य बोध के संदर्भ में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य को प्रमुख रखा गया है। इनका प्रत्येक उपन्यास आरंभ से लेकर अंत तक मूल्यों को व्यक्त करता है। उल्लेखनीय बात यह है कि कम समय में इतना लिखने के बाद भी इनकी प्रत्येक कृति ने पाठकों को आश्वस्त किया है। अपेक्षाकृत कम समय में इतने अधिक लेखन के पीछे इस तथ्य को आसानी से समझा जा सकता है कि मैत्रेयी पुष्पा के पास अनुभव का व्यापक संसार है। इस अनुभव के संसार में वह स्वयं भी है और उनके आसपास की पूरी दुनिया भी कथानक का विषय बनता गया। जैसे हम आगे चर्चा करेंगे कि इनके उपन्यासों की कथाभूमि ग्रामीण तथा शहरी दोनों तरह की है जैसे 'विज़न' उपन्यास एक शहरी वातावरण का उपन्यास है। इनके उपन्यासों की ग्रामीण भूमि जानी पहचानी ही नहीं बल्कि उनके संवेदना में रची बसी है, इसीलिए वह पूरी निजता एवं प्रमाणिकता के साथ इस समय को अर्थात समाज को अंतरंगता और संपूर्ण परित्यक्ता में देखने में समर्थ है। इसी विषय में कृष्ण बिहारी पांडे ने लिखा है- 'मैत्रेयी पुष्पा के यहां गांव न तो 'अहा' का मिथ धारण किये हैं, न वे किसी फिल्मी दृश्य की तरह कुछ ग्रामीण चीजों के संकलन और सरलीकरण है। मैत्रेयी पुष्पा ने यहां स्पंदित जीवन को पूरी जटिलताओं एवं विविधताओं में यथार्थ दृष्टि से देखा है। परंपरा और परिवर्तन के टकराव को उनकी सूक्ष्म नज़र विशदता के साथ देखती है। इस क्षेत्र में वह समकालीन महिला कथाकारों से भिन्न हैं। जहां अधिकतर लेखिकाओं ने कथा साहित्य में नगरीय मध्यम वर्ग के जीवन का यथार्थ चित्रित है, क्योंकि उनके अनुभवों की संपृकित उसी समाज से है। वही मैत्रेयी पुष्पा ने व्यापक ग्रामीण समाज के भीतर जीवन को इस तरह विस्तृत किया है, जिसमें पूरा समाजशास्त्र निहित है। इस प्रकार आगे हम शोध विषय की

सामग्री एकत्रित करने के लिए लेखिका के उपन्यास साहित्य की संक्षिप्त चर्चा करेंगे। उपन्यासों को क्रमवार वर्णित करते हुए इनके नामों को उल्लेखित करना आवश्यक माना है। जिसका वर्णन इस प्रकार है:-

1.बेतवा बहती रही (1993)

2.इदन्नमम (1994)

3.चाक (1997)

4.झूलानट (1999)

5.अल्माकबूतरी (2000)

6.अगनपाखी (2001)

7.विज़न (2002)

8.कही ईसुरी फाग (2004)

9.त्रियाहट (2005)

10.गुनाह बेगुनाह (2011)

11.फ़रिश्ते निकले (2014)

मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास साहित्य के लेखन की शुरुआत 90 के दशक में की। इन्होंने हिंदी साहित्य में अपना विशेष स्थान बनाया है। नारी दशा तक इनका साहित्य सीमित नहीं है। लेखिका ने भारतीय समाज मानस में हो रहे बदलावों का सूक्ष्म अध्ययनपूर्ण चित्रण सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक क्षेत्रों की घटनाओं के परिप्रेक्ष्य में अपने कथा साहित्य में प्रस्तुत करती हैं। मैत्रेयी पुष्पा के ग्यारह उपन्यासों को आधार बनाकर शोध प्रबंध को सात अध्यायों में विभाजित किया है। इन्हीं को आधार बनाकर **"मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध एक अध्ययन"** शीर्षक का शोध कार्य किया गया है। इस शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय का शीर्षक है **'मैत्रेयी पुष्पा व्यक्तित्व एवं कृतित्व।'** इसमें लेखिका के जीवन एवं व्यक्तित्व का परिचय प्रस्तुत किया गया है। जिसमें इनके वंश परंपरा, जन्म एवं प्रारंभिक जीवन, शिक्षा, परिवार, प्रेरणा स्रोत, साहित्यिक वातावरण और युगीन परिवेश एवं कार्य क्षेत्र के आधार पर किया गया है। इसके साथ ही इनके रचना संसार, सम्मान व पुरस्कार का भी विस्तृत विवेचन है। इनकी रचनाओं के कथ्य का परिचय दिया है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत **'मूल्य बोध का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप'** का वर्णन किया गया है। जिसमें मूल्य बोध के अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप, मूल्य के समानार्थी शब्द, मूल्य विभिन्न शास्त्रों की दृष्टि से वर्णित किया है। मूल्य का विभाजन, मूल्य विघटन का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप, कारण एवं दिशाओं का अध्ययन किया गया है। अंत में मूल्य और साहित्य के संबंध तथा मूल्य के महत्व एवं प्रासंगिकता पर विचार किया गया है।

तृतीय अध्याय में **'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का सामाजिक पक्ष'** का वर्णन किया गया है। मूल्य बोध के सामाजिक पक्ष को पांच वर्गों में विभाजित किया है। पहले वर्ग में वैयक्तिक मूल्य के अंतर्गत आत्मसयंम, स्वाभिमान जैसे गुणों की चर्चा की गई है। समानता, भाई-चारा, प्रेम-समर्पण आदि पर प्रकाश डाला है। दांपत्यगत मूल्य में अर्थात दूसरे वर्ग में पति-पत्नी के अटूट संबंधों तथा इसके विपरीत पति-पत्नी संबंधों में आ रही दरार के कारण टूटते संबंधों को भी दिखाया गया है। तृतीय वर्ग में पारिवारिक मूल्यों पर चर्चा हुई है कि किस तरह परिवार के सदस्य गांव में अपने माता-पिता तथा ज़मीन को अनदेखा करते हैं। चतुर्थ वर्ग में परंपरागत मूल्यों का वर्णन किया गया है। इसमें बताया गया है कि यह परंपरागत मूल्य ही हैं जो कि व्यक्ति को संस्कारवान बनाते हैं। परंपरागत मूल्य मनुष्य को समाज और संस्कृति से संबंधित रखते हैं। पंचम वर्ग में नारी से जुड़ी संबंधित नई मान्यताएं रखी गई हैं। इसमें नारी के बदलते हुए दृष्टिकोण को व्यक्त किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में **'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास में मूल्य बोध का आर्थिक पक्ष'** को वर्णित किया गया है। इसके अंतर्गत छः वर्गों को रखा गया है। जिसमें व्यक्ति के जीवन में पैसे की प्रधानता को व्यक्त किया गया है। दूसरे वर्ग में अर्थ से आत्मनिर्भर नारी के व्यक्तित्व को दिखाया है। एक आत्मनिर्भर नारी के आर्थिक मूल्य को वर्णित किया है। तृतीय वर्ग में मज़दूरों के आर्थिक शोषण पर चर्चा हुई है। चतुर्थ वर्ग में पात्रों के आर्थिक संघर्षों के बावजूद भी जीवनयापन न कर पाने की सच्चाई को अंकित किया गया है। पंचम वर्ग में उपन्यास के पात्रों की दिन-प्रतिदिन बढ़ती व्यवसायिक मनोवृति को दिखाया है। अंतिम तथा छठे वर्ग में उपन्यास में गिरते मूल्य अर्थात चोरी, डकैती और लूट का वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय में **'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का राजनीतिक पक्ष'** रखा गया है। इस अध्याय को भी पांच वर्गों में विभाजित किया है। प्रथम वर्ग में पुलिस प्रशासन के क्रर व्यवहार को दर्शाया है। आज न्याय के स्थान पर शारीरिक शोषण हो रहा है। दूसरे वर्ग में चिकित्सा क्षेत्र में हो रहे भ्रष्टाचार को व्यक्त किया गया है। तीसरे वर्ग में चुनाव के समय किए जाने वाली राजनीति को दिखाया है। जिसमें व्यक्ति की अपेक्षा पैसे के प्रभुत्व पर प्रकाश डाला है। चतुर्थ तथा पंचम वर्ग में धोखे तथा बेरोज़गारी का वर्णन किया गया है।

षष्ठम अध्याय में **'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में मूल्य बोध का सांस्कृतिक एवं धार्मिक पक्ष'** को वर्णित किया गया है। धार्मिक मूल्य बोध के अंतर्गत तीन वर्ग विभाजित किए हैं। प्रथम वर्ग में पात्रों की धार्मिक आस्था एवं विश्वास को दिखाया है। दूसरे वर्ग में पात्रों के द्वारा सास-ससुर तथा परिवार की सेवा करना अपना धर्म माना है। तीसरे वर्ग में धर्म में अंधविश्वासों का भी जिक्र मिलता है। सांस्कृतिक मूल्य बोध में उपन्यासों में लोकगीतों से वहां की संस्कृति को दिखाया गया है। इसे भी दो वर्गों में विभाजित किया है। दूसरे वर्ग में वर्णित परंपरागत सांस्कृतिक मूल्य को रखा गया है। जिसमें पात्रों के रहन-सहन, विवाह, पहनावे आदि तथ्यों पर प्रकाश डाला गया है।

सप्तम् अध्याय में **'मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास साहित्य में भाषा शैली'** को रखा गया है। लेखिका के उपन्यासों में बुंदेलखंड तथा ब्रज क्षेत्रों के प्रभाव को अधिकतर देखा गया है। जिसमें विविध शब्दों तथा शैलियों का प्रयोग किया गया है। आखिरकार उपसंहार में समग्र शोध प्रबंध का समाकंलन प्रस्तुत किया गया है। तदुपरांत आधार ग्रंथों तथा सहायक ग्रंथों की सूची को सलंग्न किया गया है।